International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
ISSN -2393-8048, July-December 2021, Submitted in September 2021, iajesm2014@gmail.com

बालकों के सर्वांगीण विकास में शिक्षकों की भूमिका

डॉ0 दीनदयाल **व्यास,** प्राचार्य, साहेवाल स्मृति इंस्टिट्यूटेशन बी.एड. कॉलेज, नोहर, जिला हनुमानगढ़ राजस्थान

प्रस्तावित शोध की भूमिका

वर्तमान में आप, हम और हमारे बालक शिक्षा के संक्रमण काल से गुजर रहे हैं। ऐसे समय में बालक को इस दिशा में आगे बढ़ाने के लिए सभी अभिभावकों के सुझाव व सहयोग भी अपेक्षित हैं। केवल पाठ्यक्रम पूरा करवा देना ही इष्ट नहीं होना चाहिए। विद्या का अंतिम लक्ष्य बालकों का सर्वांगीण विकास एवं चरित्र निर्माण होना चाहिए। शिक्षकों के पास ज्ञान एवं अनुभव की अनमोल निधि होती हैं। जिसका लाभ छात्र को स्कूल में नियमित उपस्थित रहने पर ही प्राप्त हो सकता हैं। कई बार यह भी देखा गया है कि पढ़ाने की कार्यशैली, पाठ्यक्रम, संचालन आदि सभी पक्ष तो सुदृढ़ होते है, लेकिन अध्ययन के दौरान विद्यार्थिंयों के मानसिक तनाव, परेशानी या कठिनाई को नज़र अन्दाज कर दिया जाता हैं। इसका सीधा असर विद्यार्थी की तैयारी एवं अध्ययन पर पड़ता हैं। अतः यह भी देखना चाहिए कि संस्थान विशेष में फेकल्टी एवं प्रबन्धन के अलावा विद्यार्थिंयों के साथ भावनात्मक एवं व्यक्तिगत सम्पर्क किस प्रकार का हैं। अध्ययन के अलावा विद्यार्थिंयों को पारिवारिक माहौल भी जरूरी है क्योंकि इस सम्बल से विद्यार्थी मानसिक सफलता की ओर उन्मुख होते हैं।

हनुमानगढ़ शहर को कोचिंग नगरी कहलाना न्यायोचित होगा। प्रतिवर्ष यहाँ लगभग 2 लाख बच्चे महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय की परीक्षाओं में शामिल होते है। जिनका उद्देश्य हर हाल में विद्यार्थी को ज्ञानार्जन कराकर परीक्षा में पास कराना हैं। हनुमानगढ़ की इन संस्थानों में वर्षों के अनुभवी व्याख्याता अपने अनुभव के आधार पर पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों का मार्गदर्शन कर उनके भविष्य निर्माण में सहायता कर रहे हैं। अनेक संस्थानों में ऑडियो– विजुअल माध्यम से शिक्षा दी जाने लगी हैं। अब यहाँ बच्चों को कक्षा स्नात्तक से ही उत्कृष्ठ शिक्षा में अच्छे, उच्च शिक्षित व्याख्याताओं द्वारा शिक्षा मिलने लगी है, जो कि अच्छे भविष्य का संकेत हैं। शिक्षा संस्थानों में विद्यार्थिंयों को तराशकर हीरे का रूप दिया जाता हैं।

लक्ष्य की और सफलतापूर्वक बढ़ने वाले व्यक्ति को अपनी सामर्थ्य और क्षमताओं का आभास होता है तथा वे अपने व्यक्तित्व से जुड़ी शक्तियों एवं कमजोरियों का आँकलन रखते हैं। अगर आप भी सफल होना चाहते है तो आपको अपने व्यक्तित्व का लेखा–जोखा रखना होगा। आपको अपनी विशिष्ट शक्तियाँ, अवसर एवं रूकावट को ध्यान में रखते हुए सफलता प्राप्त की आकांक्षा रखनी है, सफलता–असफलता की सम्भावनाओं के द्वन्द्व में आपकी निर्णयशक्ति जोखिम का सही आंकलन नहीं कर पाने पर आपको लक्ष्य से अलग कर देती हैं। निश्चित ही सफलता की चाह रखते है तो जोखिम से मानसिक एवं भावात्मक रूप से लगाव रखना होगा अपनी क्षमता, साधन और मनोबल से उसका सामना, जूझने की प्रवृति एवं मानसिकता ही व्यक्ति में जोखिम उठाने की क्षमता पैदा करती हैं। ''गरीब वे नहीं जिनके पास धन नही, गरीब वे है जिनके पास कल्पना या स्वप्न नहीं होते।'' (एक सफल उद्यमी) (मनोवैज्ञानिक आधार विभाग–3, SIERT, उदयपुर)

प्रस्तावित शोध के सोपान

वर्तमान शिक्षा प्रणाली निश्चित रूप से प्रभावी और श्रेष्ठ हैं। किन्तु ऐसे विद्यार्थी जो इस शिक्षा प्रणाली में किन्हीं कारणों से असफल हो रहें हैं। और मिलने वाली असफलता से विद्यार्थी दबाव महसूस करने लगते हैं। जो ना कि उनके स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव डालता हैं। बल्कि सामाजिक जीवन में उन्हें आत्मग्लानि की अनुभूति होती हैं। जिससे विद्यार्थी पुनः अपने आप को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करने में अक्षमता का अनुभव करता हैं। और पढ़ाई से जी चुराने लगता हैं। शिक्षा उसके लिए बोझ बनने लगती हैं। और किसी न किसी रूप में वह शिक्षा से कटता जाता हैं।

आज वर्तमान शैक्षिक परिवेश में बदलाव तीव्र गति से होता जा रहा हैं। क्योंकि वैश्वीकरण के युग में शैक्षिक परिवेश का बदलना स्वभाविक ही हैं। शैक्षिक परिवेश में बदलाव की दृष्टि से एवं राष्ट्र की उन्नति की दृष्टि से उच्च शिक्षा स्तर पर मानव संसाधन विकास मंत्रालय, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, राष्टीय अध्यापक शिक्षा परिषद् तथा राज्य सरकार एवं कॉलेज शिक्षा निदेशालय की और से बच्चों के भविष्य निर्माण एवं विद्यालय शिक्षा के स्तर में गुणात्मक सुधार हेतु प्रशिक्षण को बढ़ावा देने के विचार किया गया हैं।

प्रस्तावित शोध का महत्त्व

हनुमानगढ़ की इन संस्थानों में वर्षों के अनुभवी व्याख्याता अपने अनुभव के आधार पर पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों का मार्गदर्शन कर उनके भविष्य निर्माण में सहायता कर रहे है। अनेक संस्थानों में ऑडियो–विजुअल माध्यम से शिक्षा प्रदान की जाने लगी हैं। क्षेत्र कोई भी हो सकता है जो मेरे स्वप्न और आकांक्षाओं से मेल खाता है तो निश्चित ही बेहतर अवसर की तलाश में मदद करेगा तथा दृढ़ संकल्प एवं प्रयास के तालमेल से खोजे गये अवसरों का भरपूर उपयोग सम्भव हो सकेगा। आपको अपनी मनोवृति एवं अभिलाषा को टटोलना होगा तथा यह देखना होगा कि कहीं जाने –अनजानें में आप में सफलता से विमुख होने की प्रवृति तो विकसित नहीं हो गयी हैं। आपकों इनसे स्वयं को दूर रखना होगा और सफलता के प्रति अपनी आकांक्षा को तीव्रतम बनाना होगा। आपको अपनी कल्पनाओं, विचारों, व्यवहार एवं प्रयासों को एक नई दिशा देने के लिए एक योजनाबद्ध तरीके से क्रियाशील होना होगा।

प्रस्तावित शोध के उद्देश्य

शिक्षा का उद्देश्य बालक को सभ्य, सुसंस्कृत व नैतिक मूल्यों से युक्त बनाना हैं। शिक्षा उसे अच्छे बुरे का अन्तर बताती है व उसके श्रेष्ठतम अंश को बाहर लाती है अतः बालक अपनी योग्यता व क्षमता के अनुसार उच्च्य आकांक्षा रखकर उसे पूरा कर सके, शिक्षा इसमें सहयोग करती हैं। किसी भी विद्यार्थी की कोई न कोई अभिलाषा होती है चाहे वह व्यावसायिक हो, चाहे शैक्षणिक जो बालक वास्तविकताओं व आकांक्षाओं में शीघ्र समन्वय स्थापित कर लेते है, वे सफल होते हैं। द्वन्द्व का शिकार होकर असफल एवं अवसादग्रस्त हो जाते है और वे आत्महत्या कर लेते हैं।

सामान्यतः स्नात्तक स्तर पर ही छात्र व्यवसाय के चुनाव के प्रति जागरूक हो जाते है वे अपने भविष्य के बारे में सोचने लगते है यदि छात्र अपनी योग्यता क्षमता एवं रूचि के अनुकूल व्यवसाय प्राप्त कर लेता है तो उसे व्यक्तिगत संतुष्टि प्राप्त होती है और असंतुष्टि छात्र के जीवन को कुण्ठाग्रस्त एवं नीरसमय बना देती हैं।

प्रस्तावित शोध का निष्कर्ष

इस दृष्टि से प्रशिक्षण हेतु नवीन महाविद्यालयों को मान्यताऐं दी गई ताकि वे अच्छे प्रशिक्षण तैयार कर सके जिसके माध्यम से विद्यालय शिक्षा में मूलभूतः सुधार कर सके महाविद्यालयों की संख्या में निरन्तर वृद्धि होनें से अच्छे प्रशिक्षण के बजाय शिक्षण संस्थाओं ने अपने कमायी का जरिया बनाकर महाविद्यालयों को शिक्षण की दुकान तक सीमित कर दिया। आज के विद्यार्थी भी सीधे घर बैठे ही डिग्री प्राप्त करना चाहता हैं। इसीलिये वह पैसे देकर प्रशिक्षण का प्रमाण पत्र प्राप्त कर लेता है और कोचिंग व गाईड को पढ़कर आर.पी.एस.सी. शिक्षक भर्ती परीक्षा को पास कर सरकारी शिक्षक बन जाता हैं। अब बात यह है कि ऐसे प्रशिक्षणार्थी कैसे शिक्षण कार्य को सफल बना सकेगें? जिनको खुद को नही मालूम है कि शिक्षण और प्रशिक्षण क्या होता हैं? इस प्रकार के प्रशिक्षणार्थियों की वज़ह से जिज्ञासु और ईमानदार प्रशिक्षणार्थियों को नुकसान उठाना पड़ता हैं। वह हमेशा परिणाम में पीछे रह जाते हैं। क्योंकि पैसे देने वाले तो पैसे देकर ज्यादा अंक प्राप्त कर लेते हैं। इस प्रतिस्पर्धा बढ़ने से विद्यार्थी अपने आपमें दबाव में आत्मग्लानि महसूस करने लगता हैं। और अपने केरियर को समाप्त कर लेता हैं। माता–पिता भी बच्चों में केरियर के बढ़ते दबाव की प्रतिस्पर्धा के कारण स्वयं भी दबाव महसूस करते हैं। इसका सीधा असर बालक और बालिकाओं के केरियर पर ही पड़ रहा हैं। माता–पिता की आकांक्षाऐं आभिलषाएँ और उनकी उम्मीदें बढ़ती ही जा रहीं हैं कि मेरा बालक पढ़–लिखकर अच्छी जॉब लगेगा दूसरी और वह बालक या बालिका अपने केरियर के बढ़ते दबाव व माता–पिता की उम्मीदों का दबाव नहीं झेल पाते हैं। इस प्रकार की शिक्षा व हताशा से उन्हें असफलताऐं प्राप्त हो रहीं हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

तेज संगीता, पाण्डेय तेजस्कर, : 2007 समाज कार्य, प्रकाशन जुबली एच फाउण्डेशन, लखनऊ।
अहूजा, राम 2000 सामाजिक समस्याएँ, रावत पब्लिकेशन, दिल्ली।
मदन, डा0 जी0आ0 2008 समाज कार्य, विवके प्रकाशन, जवाहर नगर, दिल्ली–7।
शर्मा, वीरेन्द्र प्रकाशः 2004 समाजशास्त्र का परिचय, पंचशील प्रकाशन, जयपुर।
मदन, जी0आर0 : 1997 भारतीय सामाजिक समस्याएँ विविध प्रकाशन, दिल्ली।